वोट हमारा हक़ भी है और फ़र्ज़ भी

कमला भसीन

हमारा देश एक प्रजातन्त्र है, यानि प्रजा या भारत के सब प्रौढ़ निवासी अपनी सरकार चुनते हैं। हमारे गांव, राज्य या देश के बारे में कौन निर्णय लेगा, कौन हमारा प्रतिनिधि बन कर सत्ता में आएगा, यह हम सब तय करते हैं। अगर अच्छे, ईमानदार, समझदार लोग नेता बनते हैं तो हम सब की बदौलत बनते हैं। अगर बेईमान, कम समझ, स्वार्थी, सत्ता के भूखे लोग गद्दियों पर बैठते हैं तो वह भी हमारी बदौलत।

आजकल फिर से चुनावों की तैय्यारियां हैं। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश विधान सभाओं के चुनाव कुछ महीनों में होने वाले हैं।

हाल ही में बने क़ानून की भी इन दिनों बहुत चर्चा रही है। इसके तहत पंचायतों में औरतों के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित कर दी गई हैं। हम औरतों के लिए अब राजनीति और अपनी वोट की ताक़त को समझना ज़रूरी हो गया है। वोट देना हमारा अधिकार तो है ही, हमारा कर्तव्य भी है। ये अधिकार और आरक्षण हमें दान नहीं मिला। इन्हें हासिल करने के लिए औरतों ने लम्बे अर्से से लड़ाई की है, मांग की है।

यह मांग इसलिए की गई थी क्योंकि जितने राजनैतिक तन्त्र हैं (पंचायत, विधान सभा, संसद) वो हमारी ज़िंदगी से जुड़े सवालों पर निर्णय लेते हैं। उदाहरण के तौर पर ग्राम पंचायत गांव के बारे में फ़ैसले करती है। विधान सभा और संसद में हमारी शिक्षा, सेहत, धन्धा, कृषि आदि की नीतियां और योजनाएं बनती हैं। शिक्षा कैसी होगी? बाल-वाड़ियां बनेंगी या नहीं? राशन मिलेगा या नहीं और अगर मिलेगा तो किस क़ीमत पर मिलेगा? जंगल कटेंगे या बचेंगे? गांव की जमीन पर किसका हक़ होगा? औरतों को जायदाद का हक़ होगा या नहीं? मकान और खेत के पट्टे औरतों के नाम होंगे या नहीं? आई.

हमारी वोट हमारी ताक़त

ले मशालें चल पड़ीं बेदार बहने देखिये
अब अन्धेरा जीत लेंगी मिल के बहने देखिये
वोट की ताक़त समझ कर वोट देने जा रहीं
मिल के अब हम ज़िन्दगी अपनी बदलने जा रहीं
क्या हैं वादे क्या इरादे ये ज़रा समझाइये
औरतों के मसलों पर क्या सोच है बतलाइये
कौन जीते कौन हारे अपना है ये फ़ैसला
वोट की ताक़त ने ही हमको दिया ये हौसला
नेक है, सच्चा है जो, है वोट का हक़दार वो
वादे अपने भूले ना है अपना उम्मीदवार वो
रोज़ी रोटी तालीम सेहत हम सभी के पास हो
औरतें यहां हैं बराबर ये हमें अहसास हो
हमारी शिरकत के बिना जम्हूरियत है नाम की
जो तवज्जो दे न हमको वो पार्टी किस काम की

आर. डी. पी. में औरतों को कर्ज़ मिलेगा या नहीं? औरतों को मर्दों के बराबर मज़दूरी मिलेगी या नहीं? ऐसे सारे फ़ैसले हमारे चुने प्रतिनिधि लेते हैं। इसीलिए यह ज़रूरी है कि पंचायत, विधान सभा और संसद पर सिर्फ़ अमीर, 'सवर्ण', मर्दों का ही अधिकार न हो। इन राजतन्त्रों में अनुसूचित जन-जातिओं व औरतों की मौजूदगी ज़रूरी है ताकि वे अपनी आवाज़ उठा सकें और अपने हितों की रक्षा कर सकें।

औरतों की वोट जरूरी

आजकल राजनीति में पैसे, भ्रष्टाचार, हिंसा का इतना बोलबाला है कि औरतें उस से दूर ही रहना पसंद करती हैं। ऐसे गंदे माहौल में उनका जी पाना आसान भी नहीं है। दूसरी ओर राजनीति से दूर रहना, अपनी ज़िंदगी, समाज के बारे में लिए जाने वाले फ़ैसलों में दिलचस्पी न लेना भी अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारना है। हम औरतें घर चलाने और सफ़ाई करने में माहिर हैं। हमें पंचायत घरों, संसद भवनों को भी चलाना सीखना होगा। राजनीति को भी साफ़ करना होगा। महात्मा गांधी और विनोबा भावे दोनों का यह मानना और कहना था कि अहिंसा और सच्ची राजनीति लाने के लिए महिलाओं को ही आगे आना पड़ेगा। हमें यह दोहराना चाहिए कि हमारी वोट के बिना प्रजातन्त्र या जमहूरियत आधी है। जब तक हम बोलेंगे नहीं, अपनी वोट का ठीक से इस्तेमाल नहीं करेंगे तो हमारे अधिकार, सहूलियतें भी अधूरी रहेंगी।

हम सभी को, खास तौर से औरतों को आने वाले चुनावों में ज्यादा से ज्यादा तादाद में हिस्सा लेना चाहिए और पूरी तरह सोच समझ कर वोट देनी चाहिए। हमें वोट लोगों की जाति, धर्म या लिंग देख कर नहीं बल्कि उनके विचार, योजनाएं, वादे, उनका व्यवहार देख कर देनी चाहिए। हमें हर उम्मीदवार से पूछना चाहिए कि वो कैसी योजनाएं बनाएंगे, क्या उनके और उनकी पार्टी के प्रोग्राम हैं। वो पार्टियां और वो उम्मीदवार जो धर्म व जाति के नाम पर हिंसा फैलाते रहे हैं, समाज को बंटवाते रहे हैं, ग़रीबी हटाने की जगह धार्मिक लड़ाइयों में लगे हैं, उन्हें वोट दे कर सत्ता में लाना मेरे विचार में बेवकूफ़ी होगा। हमें यह भी पूछना और देखना चाहिए कि हमारे उम्मीदवारों के औरतों के बारे में क्या विचार हैं। औरतों के हित में उनकी क्या योजनाएं हैं। हमें उनसे कहना चाहिए कि हम औरतें क्या चाहती हैं।

औरतों के संगठन बनाएं

औरतें अपनी आवाज़ तभी उठा पाएंगी जब हम संगठित होंगी। बिना संगठन के हमारी तरफ़ कोई ध्यान नहीं देगा। पंचायतों में भी वही औरतें कामयाब हो सकेंगी जिनके साथ और औरतें होंगी। जिनके पास संगठन की शक्ति होगी। कामकाजी, ग़रीब औरतों के संगठन और भी ज्यादा ज़रूरी हैं क्योंकि अगर वो आगे नहीं आएंगी तो अमीर तबके की और "ऊंची" जाति की औरतें हीं आरक्षित सीटों पर चढ़ बैठेंगी। ग़रीब तबके को कोई फ़ायदा नहीं होगा। राजनीति में सफल होने के लिए व राजनीति को अच्छी तरह चलाने के लिए हमें साक्षरता, शिक्षा, तकनीक का प्रसार औरतों में करना होगा।

हम सब को मुस्तैदी से राजनीति में दखल करने की तैय्यारी करनी चाहिए और अपने अधिकारों का पूरा इस्तेमाल करना चाहिए। वोट औरों को नेता बनाने के लिए नहीं बल्कि अपना भविष्य बनाने के लिए इस्तेमाल करनी है। □